द्रुतवाचन

पीयर आँकुर

से, ओ खूब विशाल ढेङ छल। कतोक दिनसँ पड़ल। बेस चाकर-चौरस आ' भरिगर। से ढेङ सहसा उठा लेल गेल। देखैत छी ओकरा तरमे मुरछायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ कते तरहक सुन्नर-सुन्नर बीजक पीयर-पीयर आँकुर। मुदा सभटा मिरमिराइत। आलोक लेल बेलल्ला भेल। आइ जखन ओ ढेङ हटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि आब एहिसभमे नवजीवनक संचार होयतैक। ई आँकुरसभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक संग प्रकट होयत।

की एहिना युग-युगक दासत्वक ढेङ हमरालोकनिक धरतीक प्रवृत्तिक आँकुरकेँ नहि दबने रहल? की हमरा लोकनिक जन-समाजक उच्च भावनाक आँकुर आलोकक लेल बेलल्ला होइत युग-युगसँ मिरमिराइत रहल?

ई धरतीक प्रवृत्ति की! आ ओकर आँकुर ककरा कहब? गेल छलहुँ एक बेर सरकस देखबाक हेतु। बाघ-सिंह आदि हिंस्र पशुक बड़ भयानक खेल देखलहुँ। रस्सापर शून्यमे बड़-बड़ डेराओन तमाशा देखल। मोटर साइकिल, घोड़सवारी आ' अस्त्र-संचालनक एहन दृश्य आँखिक आगूमे आयल जकरा मोन पाड़ि एखनो काँपि जाइत छी। उत्सुकतावश सरकसिया लोकनिक परिचय बुझलहुँ तँ ज्ञात भेल जे सभ मराठी छलाह-गोट-गोटक'।

महाराष्ट्रक भूमिका वीरताक प्रवृत्ति, गुलामीक ढेङ तर दबि सरकसक खेलक रूपमे प्रकट भ' रहल छल। वीरताक एहि प्रवृत्तिकेँ जखन उपयुक्त वायु, प्रकाश नहि भेटि सकलैक तँ ओ लोककेँ बाघ-सिंहक भयानक खेल क' सन्तुष्ट होयबा लेल बाध्य कयलक। मुदा, ओ वीरत्वक भावना मुइल नहि छल, केवल विकासक सुविधाक अभावमे सिर-सिराइत छल। ओह गुलामीक ढेङ तर जँ दोग-दाग भेटि गेलैक तँ भगवान तिलक-सनक व्यक्तित्व आलोकक अन्वेषणमे बहराइत, प्रयत्न करैत होमरूल आन्दोलन आ' गीता रहस्य सन पुष्प आ' फूल देलथिन।

ओएह सुनू सैनिकक बिगुल। 'राइट-लेफ्ट' प्रारम्भ भ' गेल। गोरखा फौज कवायद क' रहल अछि। बाघ-भालु, उभड़-खाभड़, चोटी-घाटी आ' बोन झाड़क भूमि हिनकालोकनिमे असीम साहस भरने अछि। हिनकामे अनुशासनक भावना एहि कोटिक अछि जे संसारमे कम्मे ठामक लोक हिनकासभसन आदर्श सैनिक भ' पबैत अछि। मुदा विकासक असुविधाक ढेङ तर पिलपिलाइत हिनका चपरासी, दरबान, संतरी होटलक नोकर आ' साम्राज्यवादी अंग्रेजक सैनिक बनि संतोष कर' पड़ैत छनि।

आ' लगक बात थिक। चन्द्रगुप्तक वाहिनीक जे सैनिक, विश्व-विजयिनी ग्रीक सेनाकेँ पराजित कयलक' जत'क वीरलोकनि तरुआरि, समुद्रगुप्तक नेतृत्वमे समस्त आर्यावर्तमे चमकल जत'क वीर-भावना शेरशाहक आगू-आगू चलि दिल्ली पर विजय पओलक, जाहिठामक स्वातंत्र्य-प्रियता सन सत्तावनमे वीर कुँवर सिंहक कंठसँ रणहुँकार बनि प्रकट भेल, ओहि आरा, छपरा आ' पटना जिलाक सैनिक भावनाक आँकुर परतन्त्रताक ढेङ, तर तेना दबकल रहल जेना हुनकालोकनिकेँ कान्सटेबुल, जमादार दरबानजी आ' जमींदारक मजबुरी सिपाही बनबा लेब बाध्य होम' पड़ल।

मध्यप्रदेशक एकटा गाममे छलहुँ। किन्तु साहित्यिक बन्धुक अनुरोधपर रामलीला देख' गेलहुँ अरे, ई की? रामलीलाबला तँ सभ केओ गौआ-घरूआ छलाह अपना जवारक लोक। गामपरक महिष-मोइसभक मुँहसँ आन प्रान्तक स्टेजपर गीतगोविन्द, विद्यापति तिरहुता आ' बटगवनी सुनि, आन भाषा-भाषीकेँ मुग्ध भ' भ' लोटि लसैति देखलहुँ। नयनाभिराम एक्टिंग, कोकिल-कंठ, साधारण स्टेज, कुल तीन चिरी- चौंत भेल परदा, बिनु स्कूलक मुँह देखने एक्टर, जर्जर वेश-भूषा मुदा, हजार-हजार दर्शकक मन्त्रमुग्ध भीड़।

मिथिला माँटि-पानिमे युग-युगसँ साहित्य, कला आ' दर्शनक बीज सँचित छैक। जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक ओ बीज वृक्ष बनि अयाची, मंडन, वाचस्पति, उदयनाचार्य आ'विद्यापतिक रूपमे पत्र-पुष्पसँ युक्त भेल। दर्शन, कला ओ साहित्यक फल तकरे परिणाम थिक।

मुदा, गुलामी आ' प्रतिकूल वातावरणक दाबनि पड़ि गेलासँ ओहि अमर बीजसभक आँकुर पीयर पड़ि गेलैक तथा ओकर बाढ़ि अवरुद्ध भ' गेलैक अछि।

विकसित नहि होयबाक कारण ओ रामलीलावला नटकिया, भनसीया, कीर्त्तनियाँ आ' कथावाचक रूप ल. लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीतपर कनैत रहि गेल, नृत्यकलाकेँ मनचुम्भी आ'जालिमसिंहक रूप लेम' पड़लैक, साहित्य एकर नारीक कंठसँ समदाउनि बनि कानि उठलैक, संगीत ओकर डोमक ओढ़नीक स्वर कुसुमा दीनाक विलाप बनि चित्कारक' उठल, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत कुण्ठित भ' गेलैक आ दर्शक श्राद्धस्थलीमे शास्त्रार्थ करैत हपस' लगलैक।

अहाँक की विश्वास अछि?-एकटा वृद्ध विद्वानकेँ पुछलियनि स्वतन्त्र भारतकेँ मिथिलाक की देन होयतैक?

वृद्ध मुस्कायला जँ विकासक समुचित अवसर भेटय तँ मिथिलाक धरतीक ई आँकुरसभ कवि, दार्शनिक अभिनेता, लेखक, चित्रकार ओ कलाकारक रूपमे प्रस्फुटित भ' उठत। फेर एकर पुष्पक मधुर गन्ध संसार भरि व्याप्त भ' उठत।

ओ कनिय ठमकिक' कहलनि-सभसँ बेसी प्रगति करती मैथिलानी। सीता, गार्गी आ' भारतीय परम्परा नष्ट नहि भ' गेलैक अछि-केवल सुषुप्त छैक। ओकरा जाग्रत होयबामे कनियो काल नहि लगतैक।

अंग्रेजसभ विभिन्न स्थानक माँटि-पाँनिक एहि आँकुर विशेषकेँ बहुत हद धरि चिन्हैत छल। ओ एहि स्थानीय विशेषतासँ अपन ढंगपर उठओलक। सिक्खकेँ भारतक खड्गहस्त, गोरखाकेँ राइफलधरी, भोजपुरीकेँ पुलिस, मद्रासी शास्त्रधुरणीकेँ आइ० सी० एस०, बंगालक भद्रलोकनिकेँ किरानी आ' स्टेशनमास्टर बनओलक। मुदा ठोकि-ठाकि ओतबे दूर धरि उठबाक अवसर देलकनि जते दूर धरि ओ ओकरा लेल उपयोगी भ' सकतथि। हँ, ई भिन्न बात जे ए देशक संस्कृतिक जड़ि दर्शनक माँटिमे एतेक गँहीर तक गेल छलैक जे एहू विपन्न स्थितिमे महात्मा गाँधी, महाक

टैगोर, महावैज्ञानिक रमण आ महादार्शनिक राधाकृष्णनक आविर्भाव भ' सकल, जखन कि आन उपनिवेश-अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आ कनाडा सन देश एको टा उल्लेखनीय कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ दार्शनिक नहि द' सकल।

मुदा, आइ तँ अंग्रेज नहि अछि। गुलामीक भरिगर ढेङ आब हटि गेल अछि। देखैत छी ओकरा सुन्नर-सुन्नर बीजक अँकुर युग-युगसँ अन्हारमे रहैत-रहैत कनेक अधिक पीयर पड़ि गेल अछि, पिरपिरा रहल अछि।

एहि अँकुर सभ लेल आलोक चाही जल चाही आ खाद चाही से कोना प्राप्त होयतैक? सभसँ पहिने समाजमे ई चेतना चाही जे आलोक, जल आ खादक अभावमे ई अँकुरसभ नष्ट भ' जायत। बिना उपयुक्त वातावरण नहि भेटने ओकरा विकास नहि भ' सकतैक।

एहन अँकुरसभक विकासक लेल सभसँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्व-विद्यालयसभक, जाहिमे ओहिठामक विशेषतासँ युक्त विषयकेँ सभसँ अधिकतम प्रोत्साहन देल जा सकय। मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुख आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ' दर्शन विषयक प्रधानता, नहि जानि कतेक कते 'महान' केँ उत्पन्न क' सकत।

हमर कथनक ई अर्थ कथमपि नहि जे मिथिलामे करियप्पा अथवा नेपालक गोरखामे विद्यापति नहि भ' सकैत अछि। मानव अद्भुत आ' असाधारण जीव थिक। ओ कत', कखन आ' कोना कोनरूपमे अपन विकास करत से कहब कठिन। मुदा, विभिन्न माँटि-पानिमे जे स्थानीय विशेषता होइछ तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। केरलक नारिकेर कुंज आ मिथिलाक आम्रवन अपन-अपन विशेषताक सहज परिणाम थिकैक। ई के कहत नहि?

से ओहह देखियौक ने कला, साहित्य ओ दर्शनक अमर बीज पीयर-पीयर अँकुर। पिलपिलाइत, क्षीण आ मौलायल-जेना चिकरि-चिकरि कहि रहल हो-स्थान, अधिक स्थान चाही, आलोक, अधिक आलोक चाही।

□□□

स्वस्ति। चि0 शंकर कँ शुभशिष: सन्तु तरामय वृत्तम-

तौं कतेक बेरि लिखलह जे बाबा अओ, अहाँ एतेक विषय पर पत्र लिखैत छी मुदा आइ काल्हि प्रचलित टाका लए जे वर सभक विवाह भए रहल अछि, ताहि प्रसंग किछु नहि लिखैत छी। हम एहि प्रश्नक उत्तर देबामे जानि बूझि अनठबैत छलहुँ। तकर कारण ई अछि जे हमरा लिखने समाज कनिको प्रभावित होएत तकर तँ संभावना अछिए नहि, तखन अपन कागत, मोसि ओ क्षणक बेरबादी हम किअए करू। एकर अतिरिक्त इहो सम्भावना अछि जे हमरा पर समाजक लोकक कोप भेलासँ बहुत प्रकारक हानि से भए सकैत अछि। हमरा जनैत एहि विषयक चर्चा निर्जन मरुभूमिमे पानि लेल चिकरब जकाँ, आकाशमे लाठी चलाएब जकाँ, पानि पिटनाई जकाँ, बालु पेरि ओहिसँ तेल बाहर करबाक प्रयास जकाँ, घोड़ाका अण्डाक जोगएबाक यत्न जकाँ, गुलरिक फूल तोड़बाक इच्छा जकाँ व्यर्थ होएत-अरण्यरोदन होएत से कहह। ई कतोक बेरि फूल तोरा कहि चुकल छिअहु, मुदा तथापि ताहिलेल बेरिबेर तौं आग्रह नहि दुराग्रह कएने छह-तँ आइ हम तोहर इच्छाक पूर्तिक प्रयास करैत छी। हमरा अपना जे भावी होएत से बस होअओ।

शास्त्रमे आठ प्रकार विवाह कहल गेल अछि। ओ आठो प्रकार एना होइछ-(1) ब्राह्म, (2) दैव, (3) आर्ष, (4) प्राजापत्य, (5) आसुर, (6) गान्धर्व, (7) राक्षस, (8) पैशाच। ओहिमे प्रथम चारि प्रकार मात्रक विवाह ब्राह्मणकँ विहित अछि। एहि मध्य ब्राह्म विवाह भेल जे कन्याक पिता गुणवान वरकँ स्वयं बजाए हुनका वस्त्रादि दए तथा मधुपर्कादिसँ पूजित कए हुनकर अपना कन्याक संग विवाह करब। यदि यज्ञक पुरोहितकँ अलंकारादिभूषित कन्या देल जाए तँ से भेल दैव विवाह। एकटा वा दूटा गाए-बड़द वरसँ लए भेल कन्यादानक नाम आर्ष विवाह। "अहाँ दुनू एक संग रहू" ई कहि भेल कन्यादानक नाम छल प्राजापत्य। कन्याक सम्बंधी लोकनिकँ तथा कन्याकँ भरि पोख द्रव्य दए यदि विवाह कएल गेल तँ से भेल आसुर। वर आ कन्या द्वारा स्वेच्छया कएल विवाह थिक गान्धर्व। मारि-पीटि बलसँ बनैत कन्याक ग्रहण करबाक नाम भेल राक्षस विवाह। सूतलि वा बेहोश भलि कन्याक संग गुप्त संभोग कए ओकरा अपन स्त्री बनाएब भेल पैशाच विवाह।

एहिमे बरकँ टाका दए हुनका अपन कन्या दए भेल विवाहक कोनोटा व्यवस्था धर्मशास्त्रमे हमरा नहि देखबामे आएल तँ टाका-तिलक लए भेल विवाहक नाम हालमे राखल गेल अछि तिलकौआ। अतएव से कतएसँ आएल से जानि नहि। बूझि पड़ैछ जे उपयुक्त ब्राह्म विवाहक अर्चा-पूजाक अंगमे लोक कदाचित् टाका असर्फी सोना आदि वरकँ दैत छलैक। एना देल वस्तुक नाम अर्हणा छल। तकरे दोसर स्वरूप भेल फलदान वा तिलक। तकर अभिप्राय छलैक फलादकि दानसँ वा चानन तिलक आदिसँ वरकँ पूजित कए हुनका कन्या देल जाइत छल। ई पूजा कन्याक पिताक अपन सामर्थ्य तथा इच्छाक सर्वथा अनुसार होइत छल। जखन वर कन्याक पिताक प्रदत्त पूजा अर्थात् हुनक प्रदत्त फलादि वा चन्दनादि स्वीकार कए लैत छलाह, तखन हुनका बजाए हुनक विवाह कन्यासँ कएल जाइ छल।

जे तहिया कन्याकेँ पिता स्वेच्छया दैत छलाह से आब वरक पिता अपन बेटाक विवाहमे बलजोरी असुलए लगलाह। एकर अर्थ दू प्रकारक भेल-एक भेल काटर वरसँ लए कन्यादान करब। एक टा दू टा गाए-बड़दक स्थानमे हाथीक मूल्य कन्याक पिता (भलमानुष लोकनि विशेषतया) लेबए लगलाह एवं एहन टाका लए बेटीक विवाह कएनिहार भलमानुस-पिता बेटिबेच्चा होएबाक कुख्यातिक लाभ कएलहु पर बेटीक विवाहमे टाका गनएबामे कनेको धोखा-धड़ीक अनुभव नहि करथि। हमरा स्मरण अछि जे एक महामहोपाध्याय लब्धोपाधि जनिक घर हमर गामक निकटस्थे एक भलमानुसक गाममे छलनि तथा एक समयमे जे मिथिलाक अत्यधिक प्रतिष्ठित विद्वानक समाज वा उच्च-कुलीन वंशक वरसँ सोलह सए टका काटर लए अपन कन्याक विवाह कएने रहथि। एहि प्रसंग हुनक एक विद्यार्थी जे स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान छलाह, जिज्ञासा कएल-"गुरुजी, कन्याक बिक्री कोना कए रहल छी।" महामहोपाध्यायजीक उत्तर भेटलनि-बड़का-बड़का अर्थात जेहन मधुबनीक नामी एक चीनीक कारखाना मालिक श्रीदीप साहुकेँ छनि तेहन एक जोड़ा बड़दक मूल्य मात्र हम लेल अछि। अर्थात महामहोपाध्यायजी साधारणतया अपना दलान पर अधिकसँ अधिक 125-150 टाका मूल्यक बड़दक कतोक जोड़ा रखैत छलाह। अपन एहि अधम कार्यक समर्थनमे मनुस्मृतिक पौंतिक अर्थ लगाओल। तहिना आइ काल्हि टाका लए विवाह कएनिहार प्रायः प्रत्येक वर अपन काटर कन्यागतसँ असूल कए अपना बेटाक बदलामे स्वयं बलजोरी अर्हणाक ग्रहण कए बेटाक बिक्री करैत छथि।

जेना टाका लए बेटीक विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बेटि-बेच्चा, तहिना टाका लए विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बिकौआ। ई बिकौआ लोकनि कन्याक पितासँ काटर लए एकाधिक (हमरा ज्ञानसँ 21 टा धरि) विवाह करैत छलाह। बिकौआक स्त्री वा सन्तानक संभरणक भार नहि। एहन बिकौआसँ विवाहित बेटी कन्यादानी वा 'कनेदानी' प्रायः नैहरहि मध्य रहैत छलीह। अपना पिताक परिवारमे कन्यादानी बेटीक बड़ जूति रहैत छल। बापक परिवारक कोन कथा गामहुँमे हुनक बड़ धाख। यदि केओ विख्या अनलक तथा कोनो कनेदानीकेँ ओ पसिन्न वा जुगलत नहि जानि पड़लनि तँ गामक कोन कथा, दलान परसँ परिछनिक पश्चात् वा ओठंगर कुटाए बिना विवाहक आपस कए देल जाइत छलाह। एहन फिराओल आँखिमे काजर, कपारमे चानन तथा पहुँची पर कंगन बन्हने कतेको भाग्यावान वर वा दुलहाकेँ हम देखि चुकल छी।

आब यथा लोकमे नव प्रकाश अएलैक अछि तेना-तेना बेटी-बेच्चा तथा कनेदानी शब्द सुनबामे नहि अबैछ। बहु-विवाहकारी बिकौआ सेहो गेलाह। कनेदानीक बेटा भगिनमान कहल जाए बला मात्रिकमे परजीवी भेनिहार भलमानुसक सन्तान लोकनिक प्रायः आब अभाव सन भेल अछि। चतुर्थीक नेओत-पुरी अथवा राजपूत लोकनि जकाँ भतखइक वा सौजन्य वा स्वजनताक प्रतीक स्वरूप सिद्धान्त भोजनक व्यवहार लुप्तप्राय अछि। चतुर्थीक पश्चात विवाहसँ कोनो अयुग्म शुभ दिनमे मासाभ्यन्तर जमाइक बिदाइक व्यवस्था लुप्त भेल। विवाह कए प्रथम-प्रथम गाम अएलापर चुमाओन करएबाक व्यवहार गेल। आब तँ साधारणतया जे बहु जल्दी जमाएकेँ बिदा छोटका डाला लए करत से कोजागराक एकाध दिन पूर्व करत। एकर फल ई होइत छैक जे बिदाइ तथा कोजागरा दुहू अवसरक भार एकहि बेर देल जाइत छैक। यदि विवाहमे पहिने दू वा चारिटा व्यक्ति बरिआती अबैत छलाह, तकरा बदला आइ सए दू-सए धरि

सेहो बरिआती अबैत छथि। हँ, बरिआती लोकनि पहिने दुइ टाका सोहाग दए भोरे-भोरे अपन बाट धरैत छलाह, तकर बदला ओ जतेक दामक धोतीक अपेक्षा करताह ततबा सोहागमे टाका देथिन्ह। कतए पहिने अनोन तरकारी सहित सोहारी वा चूड़ा खाथि वा स्वयं अपनहि हाथे भानस कए कन्यागतक ओहिठाम भोजन करथि, कतए आब आजु-लहसुन देल दालि, तरकारी तथा बाँटीक छागरक वा दोकानसँ आनल हलाली मांस तथा माछ जे कन्यागत खाए नहि देलक तकरा गारि पढ़ैत रातिमे निद्रामग्न होइत छथि। आब द्विरागमनक बरिआतीक प्रथा गेल। आब द्विरागमन मात्र बिदागरी रहि गेल अछि।

आब जे व्यवहार चलल अछि अर्हणाक रूपमे कन्यागतक स्वेच्छया देल वस्त्रादि नहि; प्रत्युत नगद रुपैआ। पहिने ई टाका "सैकड़ा" मे छलैक, तखन ई हजारमे "व्यवस्था" होअए लागल; आब ई दश हजारक गुणनफलमे लागू भए रहल अछि। विवाह की भेल, वरक खरीद-बिक्री। तँ हमर एक परिचित एम०एल०ए०क कन्यादान यथासंभव टाका देला पर निश्चय भेल। वर-बरिआतीक सभा वा वरहट्टासँ बिदाह वरक दाम-कामक चुकती भेलहु पर होएबोमे देरी देखि बेचारे कन्यागत धैर्यहीन भए बजलाह-कृपया बरबड़द हमरा जिम्मा शीघ्र करू। किनलाहा वरकेँ कनेको दोसरक अधिकार अहाँलोकनिकेँ नहि अछि। एहिपर वरक पिताकेँ ततेक ने तामस भेलनि जे लेल वरक दामकेँ आपस कए विवाह नामञ्जूर कए देल। हमरा ईहो स्मरण अछि जे वैवाहिक कथामे कन्या पक्षक कहब जे सिद्धान्तक एक-एक टाका दुनू पक्ष देअए तथा वर पक्षक विचार जे दुनू टाका कन्यागते देथि से छल। एक टाकाक बात छलैक, होइत छल जे कोनो एक पक्ष अपन जिद्द छोड़त तथा सभाक बात छलैक; राति बिताइओ सिद्धांत लिखबए कन्यापक्ष बला वरकेँ लेबए अओताह। ताहि भरसँ हमरा सहित बरिआती लोकनि कन्यागतक गाम दिससँ अबैत प्रत्येक लालटेमक ज्योति दिसि टकटकी लगौने भरि राति बैसले रहलाह। वर लेबए केओ नहि आएल।

नवका व्यवस्थासँ एक अप्रत्याशित लाभ ई भेल जे देल काटरक टाका डुबि जएबाक भयसँ केओ वरकेँ फिराए नहि दैछ। हँ, ई बात दोसर छैक जे इच्छानुरूप मांस-माछ भोजन नहि भेटने वा नाच गान, मलाल, झाड़-फनुसमे खर्चा नहि कएला पर कन्यागतकेँ अपमानित कएल जाइत छनि। एक हालक वार्ता थिक। एहिना पच्चीस हजारक अन्दाज टाका लए अपना बेटाक विवाहक इच्छुक एक धनिक व्यक्ति कन्यागतकेँ विवाहसँ पूर्व कन्या देखएबाक आदेश दलथिन तथापि ई कहि जे देखाओलि कन्या ओ नहि छलीह जकरासँ विवाह निश्चित छल, बरिआती सभ आपस आबए लगलाह काटरक टाका बिना आपस कएने। कन्यागत सेहो सङोर कएलक। बरिआती लोकनिक स्वागत तकर पश्चात् गारि मारिसँ तथा भोजन अभोज्य जीव बेङकेँ थारी-थारी कुदाएकेँ करओलकनि मारिक डरसँ की करैत जएताह, अगत्या वरक विवाह भेल।

टाका काटर हजारक हजार गनिए जे कन्यागत चएन रहताह से नहि। अपनो वा श्वशुरक जहल जएबाक संभावनाक डरसँ ई गछबो नहि केओ करताह जे याचित वर-मूल्य दए विवाह ठीक कएने छथि-आब जहिआसँ नवका दहेज कानून लागू भेल अछि तहिआसँ प्राय: अधिक विवाह "आदर्श" भेल कहल जाइछ। यद्यपि हमरा ईहो सुनल

अछि जे एक सज्जनक कन्यादानमे लक्षाधिक टाका खर्च भेल, यद्यपि हुनका देखौआ 5-6 बीघा मात्र खेत छनि।

महाभारतमे सेहो एकठाम काटर वा मूल्य लए वर-कन्याक विवाहक चर्चा भेल छैक। भीष्मक उक्ति छैनि-

यो मनुष्यः स्वकं पुत्रं विक्रीय धनमिच्छति।

कन्यां वा जीवितार्थी वयः शुल्कं संप्रयच्छति।।

सप्तावरे महाघोरे निरये वालसा ह्यये।

स्वेदं मूत्रं पुरीषं च तस्मिन् मूढः समश्नुते।।

अर्थात् बेटा वा बेटीक विक्रयसँ वा टाका लए विवाहार्थ कन्या प्रदानसँ लोककेँ नरकगामी होबए पड़ैत छैक। यतः एक संग कन्याक विवाह तथा बेटाक बिक्रीक निषेध अछि, तकर साहचर्यांत अर्थ भेल कन्याक बिक्री तथा बेटाक विवाहमे टाका लेबाक निषेध।

ऊपर चर्चित दुइटा धरि गाए-बड़दे लए जे कन्याक ग्रहणक धर्मशास्त्रीय व्यवस्था अछि तकर स्पष्ट खंडन आगाँक पाँक्तिसँ होइछ।

आर्षे गोमिथुनं शुल्कं केचिदाहुर्मृषैव तत्।

अल्पो वा बहु एतद् विक्रयस्तावदेव हि।

यद्यप्याचरितः कैश्चिन्नैष धर्मः सनातनः।।

एहना हालत पर प्रतिदिन एकबारमे पढ़ैत छी जे यौतुक नहि भेटला पर अमुक कन्याकेँ मोक्ष (तलाक) देल गेल, अमुक कन्याक वर तथा हुनक पिता द्वारा हत्या कएल गेल वा ओ कन्या स्वयं आत्महत्या कएल। अथवा एक घटना हमरा जानल अछि जाहिमे कन्यागतकेँ बहुत धनिक जानि आगाँ चलि सहस्र-सहस्र लाभ करबाक आशामे एक पढ़ल-लिखल समाजमे प्रतिष्ठित बरक बूढ़ पिता कन्यागतक सभ प्रकारेँ संभव बेइज्जति कएने छथि, यद्यपि जे कन्या पिता ओतेक धनिक नहि जतेक वर पक्ष बुझने छलथिन आ ओ किछु देबाक प्रतिज्ञो नहि कएने छलथिन। ततबए नहि। ई विवाह एक भूतपूर्व एम॰ एल॰ ए॰ नहि अपितु भूतपूर्व राज्यमंत्री जे वरक सम्बन्धी छलाह हुनक प्रस्ताव पर, कन्यागतक प्रस्ताव पर नहि, भेल छल। दुर्भाग्यसँ कन्या पढ़बामे वरसँ नीक छलैक जे वरकेँ पसिन्द नहि। ताहि लेल विभिन्न बहाना कए कन्याक पढ़ब बन्द भेल। तोरा जानल छहु जे ई काण्ड के कएल। काटर-प्रथाक दुष्परिणामक ई कतोक कथाक संचय मात्र कएलहुँ अछि। आगाँ यदि एहि दिशि तोहर रुचि देखबहु तँ प्रत्येक घटनाक टीकाक रूपमे विस्तृत विवरण लिखबहु।

□□□

दिनेश बाबूकेँ पुछलिएन जे रमेश तऽ अहाँ केँ बड्ड उकट्ठ करै छल तऽ हैदराबाद किएक अनलिऐक? ताहि पर अपन व्यथा सुनबऽ लगलाह-"की कहू, तैं तऽ अनलिऐक। एकर बाप छोट भाइ छल। ओकरा पढ़ाओल-लिखाओल। किछु-किछु व्यवसाय करऽ लागल। हाथ पर दू टा पाइ आबऽ लगलैक तऽ सन्देह भेलैक जे हम बाँटि ने' लिअई। तैं भिन्न भऽ गेल। लेकिन किछुए दिनक बाद, बुझले अछि जे एक्सिडेंटमे चलि गेल। रमेश ओहि समय आठे-दस बरखक रहल होएत। ओकरा बी.ए. तक पढ़बाक खर्च देलिऐक। तकरा बादसँ गामहि रहि सहारा फाइनेंस करै एजेंट बला काज करऽ लागल। लेकिन उकट्ठी तेहेन भारी जे तबाह भऽ गेलहुँ। सभ दिन दू आंगुर कऽ टाटी घसका दिअए, आरि छाँटि लिअए, सीसो पाँगि लिअए, जामुन पाँगि लिअए, आमक ठाढ़ि काटि लिअए, बाँस काटि लिअए, आमक मासमे आम झखा लिअए-तंग-तंग कऽ देलक। तखन हारि कऽ ओकरा नौकरीक लोभ दऽ कऽ हैदराबाद आनल। भगवतीक एहेन कृपा जे हम जाहि कम्पनीमे काज करै' छी ताहीमे भऽ गेलैक। गाम पर जे उत्पात मचौने रहैत छल, ताहिसँ आब निश्चिंत छी। दोसर बात ई जे आबू हमरो बएस भेल। कहिया की हएत से के जनैए? गामसँ एतेक दूर छी। कियो कनहो दै' बला रहक चाही ने'।" हम कहलिएनि जे बहुत उत्तम विचार अछि।

किछु दिनक उपरान्त सुनऽमे आएल जे रमेशकेँ पैसाक कोनो चपलामे नौकरीसँ निकालि देलकैक। किंतु मासक अन्दरे कत्ता कोशिश-पैरवी कऽ दिनेश बाबू ओकरा दोसर नौकरी पकड़ौलनि। एहि नौकरीमे खूब तरक्की कएलक कारण राता-राती एक केँ दू बनबऽ मे ओ माहिर। धीरे-धीरे रमेश एकाउन्टेन्टसँ मैनेजर भऽ गेल-आर.एन. झा, मैनेजर। नवका नौकरी पकड़लाक बाद ओ डेरा अलग कऽ लेलक। ताठ-बाटसँ रहऽ लागल। मालिक एकटा गाड़ियो दऽ देलकैक। खूब धुमधाम सँ विवाह भेलैक, हमर जमाएक पितियौत बहिनसँ। काका-काकीकेँ बिसरऽ मे समय नहि लगलैक। छओ मास-साल भरिमे ककरो ओहिठाम विवाह-उपनयनमे भेंट-सेहो प्रणाम-पाती तक सीमित।

रिटायरमेंटक बाद दिनेश बाबूक समस्या कसि कऽ गहराए लगलनि। थोड़-बहुत जे पैसा भेटलनि से इन्वेस्टमेंटक नाम पर बेटा उमेश उड़ा लेलकनि। ओहो घपलेबाज नम्बर एक-ओकरो नौकरी छुटलैक। ओकर पत्नी एवं 5-6 बर्खक स्कुलिया बेटा-सभक भार दिनेशे बाबू पर। कन्यादान तऽ ओही दिन कपारमे ठोका गेलनि जहिया बेटी शौलूक जन्म भेलैक। काजमे काज एकहि टा भेल छलनि जे बेटीक नाम एम.बी.ए. मे लिखा गेल रहनि। एही मध्य हुनका ओहिठाम एक दिन गेलहुँ। बहुत चिन्ताग्रस्त बुझएला। घरमे दुइए प्राणी। बेटा खानाबदोश-जखन इच्छा सुतनाइ, जखन इच्छा उठनाइ, जखन इच्छा नहेनाइ, जखन इच्छा खेनाइ-समयक कोनो हिसाब नहि। घरसँ निकलल तऽ निश्चित नहि जे ओही दिन वापस हो-कतहु कोनो दोस्तक ओहिठाम रहि गेल। नौकरी छुटलाक बाद परिवारकेँ सासुर राखि आएल अछि। ओहि दिन घरमे बेटियो नहि-एम.बी.ए.क प्रोजेक्ट वर्कक संदर्भमे मास-दू मास लेल बंगलोर गेल छलनि।

ओ दुनू व्यक्ति आ' हम बैसि कऽ गप्प कऽ रहल छलहुँ कि दिनेश बाबूकेँ बाथरूम जएबाक आवश्यकता बूझि पड़लनि। उठि कऽ गेलाह किंतु बाथरूमक गेटहि पर धड़ामसँ खसलाह। हम सभ दौड़लहुँ। बेहोश छलाह। कहुना कऽ दुनू गोटे मीलि बिछौने पर आनल, किंतु होश आपस नहि अएलनि। किछुए दूर पर क्रिस्टल हॉस्पिटल छैक-एम्बुलेंस बजा ओहिठाम भर्ती कराओल। संयोगसँ हमर ए.टी.एम. कार्ड संगमे छल जाहि द्वारा पचीस हजार टाका जमा कराओल। डॉक्टर कहलनि जे अधिक संभव ब्रेन हेमरेज भेलनि अछि। हुनक बेटाक फोन आउट ऑफ कवरेज एरिया। रमेशकेँ लगाओल, ओ कहलक जे चारि बजे तक पहुँचि जाएब। दू बाजि रहल छलैक। दिनेश बाबूकेँ आइ.सी.यू. मे लऽ गेलनि। हम स्वयं डायबेटिक। बेसी काल धरि भूखल रहब ठीक नहि। जँ हमरहि मोन गड़बड़ा गेल तऽ संकट अओर गहरा जाएत। ई सोचि हुनका कनियाँकेँ कहलिएनि जे हम कने' डेरासँ भेल अबैत छी। हुनका आँखिसँ निरन्तर नोर बहि रहल छलनि। अपन बैगसँ लालरंगक एक पोटरी हमरा दैत बजलीह-''जतबा आवश्यक बुझाए ततबा एहिमे सँ बेचि देबैक। अहाँकेँ तऽ सभटा बुझले अछि-अनका ककरा कहबैक?'' हम हुनका बहुत तरहेँ बुझबैत ओ पोटरी आपस केलिएनि।

डेरा जा कऽ आपस अएलहुँ तऽ देखल जे रमेश पत्नीक संग पहुँचल अछि। रमेशक कनियाँ हुनका पुछलथिन जे रातिमे कोना की व्यवस्था कएल जाए कि हठात्, अकचकाइत रमेश बाजि उठल-''बिसरि गेल छल। हमरा तऽ छौ बजे एक बहुत इम्पॉर्टेन्ट मीटिंग अछि। तैं एखन हम जा रहल छी। तावत उमेश आ' शीलूकेँ कहुना खबरि कऽ दियौक। हम काल्हि फोन करै'छी।'' आ धड़फड़ा कऽ चलि गेल। उमेशक फोन नहिए लागल। लेकिन शीलूकेँ खबरि भऽ चुकल छलैक, ओ काल्हि भोर धरि पहुँचि जाएत। कनेक शान्त भेल। रातिमे हमर पत्नी अस्पतालमे रहि गेलीह।

रातिमे दस बजे करीब हमरा अपन बेटी मधुसँ फोन पर गप्प भेल। ओकरा जखन समाचार कहलिऐक तऽ ओ आश्चर्यित होइत कहलक-''रमेश दुनू गोटएकेँ हम प्रसाद आइमैक्समे छौ बजे शो मे देखने छलिऐक, किन्तु शो खतम भेलाक बाद कतऽ बिला गेलैक, कत्तहु नहि देखलिऐक। असलमे आइ ओकरा सभक मैरेज एनिवर्सरी छिकैक-ओहिठाम सँ कोनो होटल गेल हएत।

भोरे सात बजे अस्पतालसँ फोन आएल जे किछुए काल पहिने दिनेश बाबू चलि बसलाह, किन्तु शीलू ओहि सँ पहिने पहुँचि चुकलि छल। मृतककेँ डेरा लऽ जाएल गेल आ' उमेशक खोज जोर-शोरसँ कएल गेल। दस बजे दिनमे ओ अनायासे घर पहुँचल तऽ देखलक हाल। थोड़ेक काल धरि खूब चिचिआएल जे हमरा बापकेँ ई समाज मिलि कऽ मारि देलक, हमरा खबरि तक नहि होमऽ देलक। फेर शांत भेल। जेना-तेना संध्याकाल धरि संस्कार भऽ गेलनि।

दोसर दिन दुपहर। जिज्ञासामे आएल किछु व्यक्ति बैसल छलथिन। ओही बीच दिनेश बाबूक कनियाँकेँ क फोन अएलनि-"काकी, अकस्मात् ई की भऽ गेलैक। हमरा तऽ आशा छल जे काका स्वस्थ भऽ जएताह, भगवानकेँ मंजूर नहि भेलनि। हम दस बजे करीब डेरा गेल रही, लेकिन अपार्टमेन्टक बाहरे पता लागि गेल जे चारि बजे साँझ धरि उठतैक। तैँ सोचल जे बीच में ऑफिसक काज सलटा लैत छी, फेर चारि बजे आएब। अन्दर गेलहुँ कारण फेर स्नान करऽ पड़ैत। साँझमे चारि बजे पहुँचलहुँ तऽ पता चलल जे लाश तऽ तीनिए बजे उठि लैक। ओमेश पर तत्त तामस उठल जे की कहू। लेकिन कऽ की सकैत छी? कोनो सहोदर तऽ अछि नहि-अछि तऽ खिर पितिऔत। ओना मोन कहलक जे एक बेर अन्दर जा कऽ हाजिरी दऽ आएबाक चाही लेकिन ठमकि गेलहुँ। ण ई जे अहाँक मोनमे होइत जे रमेश देरसँ एहि दुआरे आएल जे पित्तीकेँ कनहा नहि लगबऽ पड़ैक।"